सुखसों बालकजन्मैसोइ । सकल शूलकीबाधाखोइ ४१॥
अथ रुधिरारुकगर्भिणीसूतिकोउपाय ॥ तोटकछन्द ॥ भल्लात उशीर अतीस धरै । मोथा हीबेर धमासपरै ॥ स्यउना अरु पर्पट गुर्च लहेउ । सितचन्दन लै यह क्वाथ कहेउ ॥ त्रिय गर्भिणि और प्रसूति कही । रुधिरामै बन्द विकारसही ॥ गर्भिणि ज्वर पद्रव कोप मिटै । रक्ता अतिसार को मूल कटै ॥ सब ग्रन्थन महँ यह देखि लिखा । यामैंनहिंभाषों बयन मृखा४२॥ दोहा ॥मोथा और अतीसलै ककरासिंगी पाइ । चूरण करि यह छौद्र सों नित उठिकै जो खाइ ४३ त्रियाबानि अरु कासज्वर नाशनको सरदार ॥ अथवा छौद्र अतीसभुज गुणपूरबानिरधार ४४॥अथ बालकचिकित्सा॥ चौपाई ॥ लेहुमजीठ धवाकेफूल । लोधसारिवा लीजैतूल ॥ सह तडारिकै क्वाथ पिआवै । बालक अतीसार मुरझावै ॥ धवालोधमोथालैलीजै । बेलमजीठबेरहीदीजै॥क्वाथछौद्र युतदेय बनाय । बालक अतीसार न रहाय ।अथवायाको चूरणकरै । सहतसहित अतिसारैहरै ४५ ॥ दोहा ॥ ककरासिंगी पीपरीमोथा और अतीस॥ चूरणसमकरिकैधरैमहामिही अतिपीस४६छौद्रसहित चातुर्भुजी चाटै बालकको इ ॥ कास श्वास अतिसार ज्वर निश्चय नाशै सोइ ४७॥

इति श्रीक्षत्रीवंशावतंसशंकरप्रसादेनवैद्यजीवनभाषाकृते कासश्वासादिप्रतीकारोनामतृतीयोविलासः ॥ ३ ॥

दोहा॥ मदन कदन सुतके चरण बंदनकरौं बहोर ॥ ह्वैप्रसन्न पुरवौ सकल मंजु मनोरथमोर १॥ अथ यक्ष्माउपाय ॥ दोहा ॥ वैद्यराज लोलिम्बनृप बानीअमृतसोहाय । तृप्त होत हियमोरनहिं पुनि वरणौं चितलाय २ क्षयीरोमउ-

त्पत्तिको नाशकहौं जगहेत ॥ सिंहको सेवनकीजिये नाशै मूलसमेत ३ बहुऔषध वर्णन किये मनविश्वास न होइ॥ कमलनयनि याते कह्यौं वैद्यकसार निचोइ ४ ॥ चौपाई ॥ हे सुन्दरिशुभ आनन सोहै। सुन्दर नेत्र देखिमनमोहै ॥ नैनाखण्ड सहत युतलीजै। प्रातहि लेहको सेवनकीजै ॥ उडुगणपति समक्षयी सँहारै। जो उपाय यह करैबिचारै५ अथव्रणउपाय ॥ कोमल कुन्तल अवली सोहै । छादतिकुच मल्लीयुत मोहै ॥ त्रिफला क्वाथ में गूगुर डारै। पियत महाव्रण मूल सँहारै ६ ॥ अथ मेदारोगउपाय ॥ नाम लिये तौ मदन सतावै । रजकै ले यह बड़ो प्रभावै ॥सहत घोरि जल प्रातहि पीवै।मेदरोग नाशै नरजीवै॥ जो गणनाथ बदर समभारै । मेदशोष शुभ बदन सँभारै ७ ॥ अथ क्रिमि उपाय ॥ दोहा ॥ त्रिफला त्रिकुटा इन्द्रजव निम्बा त्रवदु मँगाय ॥ खयरउग्र गन्धा सहित इनको क्वाथ बनाय ८ छेरीमूत्रको क्षेपके पानकरै नरकोइ ॥ महाजाय क्रिमिरोग हरि निश्चय जानौसोइ९॥अथमुखरोगउपाय॥चौपाई॥ पातीदल त्रिफला लैआवै । निशादारु धौ फूल मिलावै ॥ गुर्चमुनक्का पुनियेलीजै। क्वाथबनाय सहतसों दीजै ॥ बारबार कुल्ला फिरिकरै । आननरोग पाकमुखहरै १० ॥ अथअम्लपित्तउपाय ॥ तोटकछन्द ॥ भूनिम्ब पटोल छतावरिलै। बासा त्रिफला पिचु मंदहिदै ॥ भंगरा अरु टेनव आनिधरै। यहक्वाथ बनायकै क्षौद्रपरै ॥ आमिलै अरु पित्तको मूल नशै। गनिकाज्यों बिलासमें चित्तबसै ११ ॥ अथप्रमेहउपाय ॥ चौपाई ॥ सुन्दर कुसुम दाम अनमोलै। लंबित बदनकुच नपरडोलै ॥ पर्मप्रकाश विभूषण सोहै। असकहु कवमम

देखतमोहै ॥ धात्रीफलको क्वाथबनावै। हरदीरज मधु छेपकरावै ॥ जोप्रमेह नाशन मति आवै। यह विचारकै क्वाथपियावै १२ ॥ दोहा ॥ मधुऔ छिन्नास्वरस भजु नाना जायप्रमेह॥ सईइंदु आननसुनहु करैत्रिथनसों नेह १३॥ अथवातरक्तउपाय ॥ दोहा ॥ रतिकी केलि कलानि में तोसम चतुर न कोइ॥ परवतसम उन्नतउरज कंकणकरमेंसोइ १४ अमृता क्वाथ बनायकै रंडीतैल मिलाय॥ वातरक्तनाशन महा जोयहकरैउपाय १५॥चौपाई॥ मौरेठीमंजीठकोलीजै। दारुसारिवा क्वाथकरीजै॥पुनिरंडीका तेलमिलाय। वात रक्त नाशन यहआय ॥ वासागुर्च क्वाथकरिलीजै। रंडी तैलको छेपकरीजै॥ वातरक्त नाशन जो चहै। यहउपाय करिकै सुखलहै १६॥ अथविसूचिकाउपाय ॥ सोरठा ॥ लहसुन जीरा आनि सेंधो गंधक हींग लै ॥ त्रिकुटा लीजै जानि चूरणसम करिकैधरै १७निंबूरसमेंखाय हरैविसूचीसकल विधि ॥ भाष्यो चित्तलगाय हैरतिकेलि विचक्षणी १८॥ अथतृषारोगउपाय ॥ दोहा ॥ कूट औ लाई धानकी बटकेरोह मँगाउ॥ मौरेठीअम्बुजगरी मधुसों बटीबनाउ १९ गुटिका मुख अंतरधरै तनक तनक रसखाय॥ महातृषा नाशन कह्यो लघु उपाय दरशाय २०॥ अथवातउपाय ॥चौपाई॥ एलालघु लौंगै धरिदीजै। लयप्रियंगु पीपरि युतकीजै॥ मोथाचन्दन पुनिलै आवै। केसरिनाग तहां मिलवावै॥ बेरगरी लाई लै धरै। मिहीपीसिचूरण समकरै॥ खांड़ सहत युत लेह चढ़ावै। वातपित्त कफवात नशावै २१॥ अथदाहउपाय ॥ चौपाई ॥ रमणी राय देखितव शोभा। चतुर बयनिसुनु मनअतिलोभा ॥ सुन्दर चिबुक अधर रत-

नारे । अद्भुत हार अमोल निहारे ॥ पदकर कमल अरुण समसोहै । रतिमें कुशल कलाअतिमोहै । हे बाले पर्यंक मँगावै । तापर कदली पत्र बिछावै ॥ तेहिपर सुखदशैन नरकरै । दाह और आतप श्रमहरै २२ ॥ अथखाजुउपायभुजंग प्रयातछन्द ॥ पारदै युग्म जीरा निशाद्वैधरै । मिर्च सिंदूर लै गन्धकै जो परै ॥ मनसिलै डारिकै ताहि मैदाकरै । घीवमेलै सबै खूबघोंटै खरै ॥ देहलेपैत्रिधाखाजु बाधा हरै । ग्रन्थ भाषै यथा सत्य जानोनरै २३ ॥ अथबेवाईउपाय छप्पै ॥ शोधो सहतको आनि रार गूगुर बुध आनहु । गेरूगुर अरु मोम घीव तामें समजानहु ॥ मलहम लेइ बनाय चरण में ताहि लगावै । सकल बेवाई जाइफाटि टूटी जुरि आवै २४ ॥ दोहा ॥ होदश चिक्कन कमल सम सुन्दर वरण सोहाय ॥ अद्भुतग्रंथनमें लिख्यो सोमैं कहेउँ उपाय २५ ॥ अथअर्शउपाय ॥ दोहा ॥ पथ्यातिल भिल्लातलै तीनौसम पिसवाइ ॥ दूनेगुड़से सानिकै मोदकलेहु बना- इ २६ हरैअर्श कालीनअति कुष्ठ पांडु ज्वर जाइ ॥ कास श्वासप्लीहाहरण नाशनको यहआइ २७ ॥ अथ गंडमाला उपाय ॥ चौपाई ॥ भिल्लावाकसीस मँगवावै । दंतिमूलगुड़चीत मिलावै ॥ अर्कदुग्ध महँलेप बनाय । पुनिवह तप्त लेइ क- रवाय ॥ लेपत गंडमाल दुखधोवै ॥ ज्योंसमीर घनमालहि खोवै २८ ॥ अथकंठरोगउपाय ॥ दोहा ॥ इन्द्रज कुटकी आनिकै पाढ़ाबासालेहु ॥ देवदारु मोथासहितक्वाथ क्षौद्रसोंदेहु २९ अथवा सुरभी मूत्रसों सेवनकरै जोकोइ । कंठरोग नाशै सकल वाणीनिर्मलहोइ ३० ॥ चौपाई ॥ पाठारस उतहरदी जोइ । जवाखारपीपरिलै सोइ ॥ तेजबाला सुरदारु मि-

लावै। समकरि चूरण मिहीं पिसावै॥ ताकी क्षौद्रसों गु-
टिकाकरै। सो गुटिका मुख पंकजधरै॥ कंठरोगकोटिन
मिटिजाय। सो यह तोसोंकह्यों उपाय ३१॥ अथअग्निम-
न्दप्रतीकारोपाय॥ हरिगीतिका छन्द॥ निंबुवा सुरस में आद
सैंधव पीसि चटनी कीजिये। भोजन प्रथमहीं चाटिकै ये
सकलगुण सुनि लीजिये॥ हिक्का औ कंठरोध नाशै हरै
रोगनि कासही। बहुशोथ संग्रहणी हरण कफ कास
श्वास विनाशही॥ कटुउष्ण लघुरुचिकर क्षुधाकर धा-
तु पुष्टि बखानही। अतिस्वाद करहि अबन्ध नाशै अन्न
अधिक पचावही॥ सोप्राणप्यारी कहेउँ तोसों महारुचि
तव देखिकै। पुनि जक्तहेत उपाय वरणों सुनहु चित्तल-
गाइकै ३२॥ अथबृहत्‌निम्बादिचूर्ण॥ भुजंगप्रयातछन्द॥ हिंगुवा
छार सिंधु सौवर्चलै। कंजगूदीमिलै पापरी मूललै॥ चा-
वचीते याचामिर्च जीरामरै। चेतकी सोंठि हीबेरमोदा
धरै॥ सटी पीपरी धान्यलैपुष्करै। अम्लवेतै विडंगैसमै
लैधरै॥ चूर्णसेवै जयाशक्ति भाषेगुनै। अश्मरी अर्शप्ली-
हासदालैहनै॥ आमबन्धैविबन्धै औशूलैहरै। पांडूगुल्मै
हृदयरोग सोई जरै॥ विर्संता आननै अग्निमन्दै महा।
कासश्वासै सहिक्काविनाशैकहा ३३॥ दोहा॥ भोजनप्रथ
मैघीवसों सेवनकरै जोकोइ। कंतगुलमहाक्षुधाकरिहिंग्वा
ष्टकहै सोइ ३४॥ अथहिंग्वाष्टकचूर्ण॥ दोहा॥ हिंगत्रिकुट
अजमोदलै पुनिजीरा युगलेइ॥ सेंधौलोनमिलायकै चूर
णसमकरु सोइ ३५॥ अथरुचिक्यादिचूर्ण॥ चौपाई॥ सोंचर
सैंधवचित्रक लीजै। त्रिकुटचैलभारंगीदीजै॥ शिवाऔर
युगजीराआनै। वायविडंग जवाइनि जानै॥ अजमोदा

युत चूरण करै । मातुलुंग अमलीरस परै ॥ तामें गुटि-
का लेय बनाय । अग्निमन्द अतिदेइ नशाय ॥ सकल
बदन की शूल नशावे । पचैअन्न अतिक्षुधाबढ़ावे ३६॥
अथ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ तोटकछन्द ॥ शुण्ठी युग तीनिसो भागधरै ।
पिपरीपुनितामहँ चारिपरै ॥ अजमोदजवाइनिभागपटै ।
युगभाग सो सेंधो आनि ठटै ॥ सबचूरणके समडारिशि-
वा । शुंठ्यादि प्रसिद्ध सोनाम भवा ॥ लोलिंबसोराज
बिचारि कहै । मलताप प्रलाप को वेगि दहै ॥ उदरै पुनि
शूलअनेकटरै । बवबात व्यथा अरु आंव हरै ॥ निशि
बासरभोजन चित्तबसै । नानाविधि भोजनदोषनशै ३७॥
अथबड़वानलचूर्ण ॥ दोहा ॥ शुंठी पीपरि चीतलै पूतविडंग
मिलाइ ॥ कंजकीगूदीहर्रई समशर्करा मिलाइ ३८ अ-
ग्निमन्दावे क्षुधाकर वातगुल्म जब जांय॥ बड़वानल
चूरण कह्यो ग्रन्थन को मतपाय ३९ ॥ अथविद्रधिउपाय ॥
चौपाई ॥ सहिजन और जवायनिलीजै ॥ वारुणवृक्ष
निशाधैदीजै॥ चलतर तरयुत क्काथबनाइ । चपलाचू-
रण लेइमिलाइ॥ विद्रधिरोगसमूलेहरै । यामेंनहिंसंश
य कछुकरै ४० ॥ अथहृदयरोगउपाय ॥ दोहा ॥ कमल
कलीसम उरजतव तापरसोहतहार ॥ मनमोहित हिय
अंगने सुनीबचन यहिबार ४१ अर्जुनक्काथबनायकै अ-
र्जुनस्वरस मिलाय ॥ पुनिसामें घृतछेपकै हृदयरोग
मिटिजाय ४२ ॥ अथ दन्तरोगउपाय ॥ चौपाई ॥ सुनहुप्रिये
ममवचन विशेखै । गन्धित बकुल वृक्ष यह देखै ॥
सुन्दरबदन बंधुसमसोहै । चलतिदन्तकी औषधिसोहै ॥
ताकी त्वचाको चूरणकरै । कछुककाल दन्तन में धरै ॥

हालैदशन वज्रसमकरै। सकलदशनकी बाधाहरै ४३ ॥ हरिगीतीछन्द ॥ समजाति पत्र पुनर्नवा गजकरण रंड छुलावरै। निशिदारु बच औ कूट शुंठी चूर्ण कै मुखमें धरै॥ क्रिमिजात नाशक कफकटै दुरगंधि आननकीहरै। मुखरोग सकल विनाशिकै औ दंतवज्रमहाकरै ४४ ॥ अथ रक्तपित्तउपाय ॥ चौपाई ॥ दाखशिवा वृषक्काथबनाय। खंडसहतपुनि लेइमिलाय॥ रक्तपित्तके मूलविनाशै। हरैश्वास अरुभंजैकाशै ४५ ॥ दोहा ॥ कुंजर मस्तक कोहनै वचननवोढ़ाजोइ॥ तर संबोधनसमुझिकै वद मृगनयनीसोइ ४६ रक्तपित्तनिश्चयहरै मुनिजनकह्योबिचारि ॥ मृगनयनी तोसोंकह्यों यातेगुप्तनिकारि ४७ ॥ अथ हिक्काप्रतीकार ॥ चौपाई ॥ बिस्वाकणा आंवरेलीजै। मिसिरीसहतसोंलेपकरीजै ॥ प्रातकाल जौनरयहखाय। हिक्कादोष सकल मिटिजाय॥ जो गुड़सानिकै शुंठी खाय। तबहिक्का अधिकार नशाय ४८॥ अथ भ्रमप्रतीकारः ॥ दोहा ॥ लेहुजयास क्काथकरि घृतप्रक्षेपकराइ ॥ नाशैभ्रम गोविन्द ज्यों भक्तनको दुखजाइ ४९ ॥ अथ शोकभंजनउपाय ॥ चौपाई ॥ ऐरलकले सुन्दर वसुसोहै। हंसीसुगति चालु मनमोहै॥ गर्भितमदननेत्रअनिआरे। सुनहु बैन मम परम पियारे ॥ वैद्यराज मणिवद सुनु सोई। जो अतिशोक सो व्याकुल होई ॥ ताको मदिरा पानकरावै। नाना शोककी मूलनशावै ५० ॥ अथ ऊरुस्तम्भनउपाय॥ दोहा ॥ पुनर्नवा शुंठी गुरच देवदारुपुनिलेइ॥ शिवा मिलावा मूलदश क्काथजो करिकै देइ ५१ बँधैमूत्रकीधार अति उरअस्तम्भनजोइ॥ अथवा सुरभीमूत्रमें गुग्गुल पीवै कोइ ५२ ॥ मूत्रकृच्छ्रपथरीकोउपाय ॥ चौपाई ॥ कुश औ कास

मूललेलीजै । गुखुरू शिवा जवासादीजै ॥ अमिलतासकों भेदपखान । क्वाथक्षौद्रसोंकीजेपान । महाअश्मरी दुस्तर हरै । मनकेसिद्धिमनोरथकरै ५३ ॥ सोरठा ॥ एलाभेदपषाण शिलाजीत पीपरिसहित ॥ गुड़जलमेंकरुपान अथवातं-दुलवारिमें ५४ महाअश्मरीजाय मूत्रकृच्छ्रनिश्चयहरै ॥ याते पुष्टउपाय जोचूरणसेवनकरै ५५ ॥ चौपाई ॥ बासारेणा कुचयलाजोइ । भेदपषाण इलाचीसोइ ॥ तालमखाना रण्डापरै । मौरेठी युतक्वाथैकरै ॥ शिलाजीतप्रक्षेपकराय । पुनःखण्डको लेइमिलाय ॥ मूत्रकृच्छ्र अश्मरीबिलाय । कछुसंशययामेंनहिंआय ५६ ॥ दोहा ॥ भेदपषाणहरीत-की गुखुरूलेहुमिलाय ॥ आरगबधै जवासलै इनकोक्वाथ बनाय५७मधुयुतजोसेवनकरै कृच्छ्रदाहमिटिजाय॥मूत्रब न्धखोलैमहाधातुपुष्टअतिआय ५८ ॥ अथमुंहरसाझांईको उपाय ॥ तोमरछंद ॥ बटरोहुकुष्टालोधु । मंजीठप्रियंगु जो शोधु । ममुरीअतीसजोलेइ।रातोसिखण्डसुजोइ ॥ पयस-न्सुखैमैलाय । मुहरसाझांईजाय ५९ ॥ दोहा ॥ मसुरी चूरणदूधघृत करुउबटनमुखसोइ ॥ सप्तदिवस झांईहरै शशिसमआननहोइ ६० इंगुअफालगुदीमिलै वदरीगूदी लेइ ॥ जलसोंलेपनकीजिये महाकांतिमुखहोइ ६१ ॥ चौपाई ॥ लोधबचाधनियालैधरै । इनकोउबटनमुखमेंकरै ॥ सकल मुहरसा जायँ नशाय । पिड़िकारोग महामिटि जाय ६२ ॥ अथआननरोगउपाय ॥ दोहा ॥ खरीपुरानी तिलकी सुरभीमूत्रसनाइ ॥ यहउबटनमुखमेंकरै रक्तफटिकमिटि जाइ ६३ ॥ चौपाई ॥ मुर्गाविष्टालयावैकोइ । तामेंसुर-भीमूत्रमिलोइ ॥ यहउबटन जोमुखमेंकरै । रक्तविकारके